E-ISSN: 2664-603X
P-ISSN: 2664-6021
IJPSG 2023; 5(2): 153-156
www.journalofpoliticalscience.com
Received: 14-08-2023
Accepted: 17-09-2023

डॉ. नगमा खानम
असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, दयानन्द वैदिक कॉलेज, उरई, जालौन, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ. नगमा खानम
असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, दयानन्द वैदिक कॉलेज, उरई, जालौन, उत्तर प्रदेश, भारत

पूर्व की ओर देखो नीतिः भारत के परिपेक्ष्य में

डॉ. नगमा खानम

DOI: https://doi.org/10.33545/26646021.2023.v5.i2c.273

सारांश
भारत की विदेशनीति के परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो पं. जवाहर लाल नेहरू के समय में अमेरिका, रूस और यूरोपीय देशों के प्रति भारत का झुकाव था। इसी क्रम में श्रीमती इन्दिरा गाँधी एवं राजीव गाँधी की निगाह दक्षिण एशिया देशों की तरफ गई किन्तु पी.वी. नरसिंम्हा राव पूरब की ओर आकर्षित हो रहे थे। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने वर्ष 2014 में कहा कि ''पूरब की ओर देखना ही पर्याप्त नहीं है, भारत को पूरब में सक्रिय होकर काम भी करना चाहिए।''
भारत आसियान शिखर सम्मेलन वर्श 2017 भारत के लिए खास अहमियत रखता है। क्योंकि इस वर्ष भारत आसियान संवाद होने की 25वीं वर्षगांठ थी। साथ ही यह भारत आसियान साझेदारी का 15वां वर्ष भी था। इसका महत्व इस बात से भी और बढ़ जाता है कि दिल्ली में आयोजित 2018 के गणतंत्र दिवस समारोह में 10 विशिष्ट अतिथि आसियान देशों के राष्ट्राध्यक्ष थे। हमारी विदेशनीति का प्रमुख स्तम्भ भारत का आसियान देशों के साथ सम्बन्ध है और यह पूरब में काम करो की नीति की आधारशिला भी है।
भारत के साथ आसियान देशों की व्यापारिक रिश्तों की शुरूआत 1990 के दशक में हुई थी। भारत आसियान का सेक्टोरल पार्टनर 1992 में और डॉय लॉग पार्टनर 1996 में तथा शिखर स्तरीय पार्टनर 2002 में बना। हॉलाकि भारत की मेजबानी में 25 जनवरी 2018 को आयोजित आसियान स्मारक शिखर सम्मेलन में 15 वर्ष शिखर स्तरीय पार्टनरशिप के तथा 5 वर्ष रणनीतिक भागीदारी के तथा 25 वर्ष सेक्टोरल पार्टनरशिप के मना चुका है।
आसियान देश भारत के साथ विभिन्न आर्थिक साझेदारी के साथ सामरिक सहयोग की भी आशा रखते हैं। भारत की पूर्व की ओर देखो नीति में आर्थिक सम्बन्धों पर भी जोर दिया गया। और इस नीति की विशेष बात यह थी कि जब भारत की आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं थी ऐसे समय में इस नीति को क्रियान्वित किया गया। इस नीति के परिप्रेक्ष्य में ही भारत आसियान देशों के साथ आर्थिक सम्बन्ध मजबूत करने पर जोर दे रहा है। अब सिर्फ यह एक आर्थिक नीति नहीं वरन् लगातार बदलते वैश्विक माहौल में एक सफल सामरिक नीति एवं कूटनीति बनकर उभरी है।

कूटशब्दः विदेशनीति, आसियान, सम्मेलन, आर्थिक सम्बन्ध

प्रस्तावना
भारत का आसियान देशों के साथ सम्बन्ध स्थापित करना हमारे देश की विदेशनीति का प्रमुख स्तम्भ है। भारत पूरव में काम करो की नीति को आधार मानकर चला है। पूरब की ओर देखो की नीति की शुरूआत तत्कालीन प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिम्हा राव के समय में हुई। जिसकी प्रोन्नति अटल बिहारी बाजपेयी जी की सरकार में हुई। वर्तमान में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व वाली एन.डी.ए. सरकार ने इस ओर अधिक सक्रिय और गतिशील नीति का रूप दे दिया है। 26 जनवरी 2018 को 10 आसियान देशों के राष्ट्राध्यक्षों का मुख्य अतिथि के रूप में दिल्ली के गणतंत्र दिवस पर स्वागत हुआ।
आसियान देशों में सम्मिलित देश चीन, हांगकांग, जापान, मकाऊ, मंगोलिया, उत्तरीकोरिया, दक्षिणी कोरिया एवं तायवान है। जब 2003 में तात्कालिक प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी जी ने आसियान देशों की यात्राा की उसी समय से भारत के आसियान के साथ सम्बन्ध प्रगाढ़ हो गए। जिसकी वजह से वर्तमान में इन सम्बन्धों में एकजुटता के साथ आपसी विदेश नीति को बल मिला। एक महत्वपूर्ण बात यह भी है कि भारत की पूर्वोन्मुखी नीति पर देश की एकमत्ता रही तथा इसका विरोध नहीं दिखाई पड़ा।
वैश्वीकरण व उदारीकरण के प्रभाव के चलते जब 1990 के पश्चात् क्षेत्रीय आर्थिक गठबन्धों पर जोर दिया जाने लगा तब भारत ने पूर्वोन्मुखी नीति को प्राथमिकता देना प्रारम्भ किया। आसियान की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि यह है कि भारत का आसियान प्रवेश। इसी के साथ भारत को 1992 में आसियान में सेक्टोरल डायलॉग पार्टनर का दर्जा मिला।

1995 में भारत को फुल डायलॉग पार्टनर का दर्जा मिला। 1996 में भारत को आसियान क्षेत्रीय फोरम की सदस्यता मिली। 2002 की कम्बोडिया शिखरवार्ता में भारत को सम्मिलित होने का अवसर मिला। यह शिखरवार्ता एक महत्वपूर्ण यात्रा के रूप में साबित हुई।

इस महत्वपूर्ण यात्रा के दौरान मुक्त व्यापार संधि पर भी हस्ताक्षर किये गये इस आशा के साथ कि इस संधि से भारत व आसियान के मध्य व्यापार में वृद्धि होगी। क्योंकि भारत का लगभग 45 प्रतिशत बाह्य व्यापार आसियान देशों के साथ है। 1991 में भारत का आसियान देशों के साथ 3.1 अरब डॉलर का व्यापार था जो कि 2016–17 में 80 अरब डॉलर हो गया। लाओस, म्यांमार, कम्बोडिया व वियतनाम के साथ व्यापार में छूट देने का निर्णय भी भारत ने लिया। 2010 में आसियान एवं भारत के मध्य वस्तुओं पर मुक्त व्यापार समझौता (फ्री ट्रेड एग्रीमेंट/एफटीए) के प्रवर्तन के पश्चात् से 2019–20 में उनके मध्य व्यापार लगभग दोगुना होकर 87 अरब डॉलर से अधिक हो गया है। हालांकि महामारी से प्रेरित मंदी के कारण 2020–21 में यह घटकर 79 अरब डॉलर रह गया। आसियान भारत एफटीए का उन्नयन एवं इसका प्रभावी उपयोग आसियान तथा भारत दोनों के लिए सतत् एवं समावेशी विकास को प्रोत्साहित करते हुए द्विपक्षीय व्यापार प्रवाह में आवश्यक गति जोड़ सकता है। सीधी विमान सेवा के बारे में निर्णय लेना भी आसियान वार्ता की उपलब्धि रही। भारत के 18 शहरों में यह सेवा उपलब्ध है।

इस शिखरवार्ता की एक अच्छी पहल यह भी थी कि अन्तर्राश्ट्रीय आतंकवाद संघर्ष के घोषणा पत्र पर भी इस शिखरवार्ता में हस्ताक्षर किये गये। दक्षिण पूर्व एशिया के देशों जैसे सिंगापुर, मलेशिया, इण्डोनेशिया, फिलीपीन्स आदि सभी देशों को आतंकवाद की समस्या से मुकाबले के लिए सहमत करने में भी सफल हुआ।

वर्ष 2004 का भारत आसियान ऐतिहासिक समझौता

शान्ति, सहयोग और विकास को आधार बताते हुए 30 नवम्बर 2004 को आसियान और भारत के बीच एक ऐतिहासिक समझौता हुआ। जिसमें तत्कालीन भारतीय प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने भाग लिया। वियनतिएन में सम्पन्न आसियान शिखर सम्मेलन में 13 अरब डॉलर के सीमित व्यापार को 2007 तक बढ़ाकर 30 अरब डॉलर करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया। साथ ही पर्यटन को बढ़ावा देने और यातायात में विस्तार की रूपरेखा का भी संकल्प लिया गया। आसियान शिखर सम्मेलन में प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने वक्तव्य दिया कि–''अगर 21वीं सदी को एशियाई सदी बनाया है तो आसियान को भारत के साथ मिलकर चलना होगा। ऐसा सपना पं. नेहरू ने 1947 में देखा था और कहा था कि भविश्य को सुखद बनाने के लिए एशियाई देशों को मिलकर काम करना होगा।''

विकासशील देशों को उनका हक दिलवाने और वैश्वीकरण का फायदा सब देशों तक पहुँचाने के लिए भारत और आसियान के बीच एक 18 सूत्री दस्तावेज भी जारी किया गया। द्विपक्षीय साझेदारी पर वार्ता करते हुए प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने एशियाई आर्थिक विकास समूह के गठन का प्रस्ताव भी रखा। आसियान शिखर सम्मेलन की यह वार्ता इस टिप्पणी के साथ सम्पन्न हुई कि–''भारत आसियान का पश्चिमी पंख है और जापन व दक्षिण कोरिया पूर्वी वैश्व है। आसियान रूपी जम्बोजेट के उड़ने के लिए दोनों पंखों का सहयोग अपेक्षित है।''

कतिपय बिन्दु जिन पर ऐतिहासिक समझौता हुआ

शान्ति सौहार्द एवं सामूहिक उन्नति के लिए भारत ने अपनी राजनीतिक भागीदारी को एक नया मुकाम देते हुए जिस ऐतिहासिक समझौते पर हस्ताक्षर किये उसके कुछ बिन्दु इस प्रकार है–

- इस समझौते में एक कार्ययोजना तैयार करने की बात कही गई जिसमें सदस्य देशों के मध्य व्यापार, निवेश एवं खेल के माध्यम से लोगों के बीच सम्पर्क बढ़ाने की बात की गई।
- अन्तर्राष्ट्रीय अपराधों जैसे मादक द्रव्यों, मानव तस्करी खासकर महिलाओं व बच्चों की तस्करी, समुद्री पायरेसी, काले धन जैसे गैरकानूनी गतिविधियों से निपटने के लिए प्रयास मजबूत करने पर सहमति बनी।
- मुक्त व्यापार क्षेत्र का गठन करने पर भी भारत और आसियान के बीच सहमति बनी।
- विकासशील देशों तक वैश्वीकरण के लाभ पहुँचाने के लिए डब्ल्यूटीओ में संयुक्त प्रयास करने की प्रतिबद्धता दोनों देशों ने जताई।
- एक–दूसरे के देशों के बीच प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को सरल व मजबूत बनाने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद का मिलकर मुकाबला करने पर भी सहमति बनी।
- अन्तर्राश्ट्रीय नियन्त्रण के अन्तर्गत व्याप्त व्यापक जनसंहार के हथियारों का प्रसार रोकने के लिए जरूरी कदम उठाने पर भी आपसी सहमति बनी।
- इन दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले देशों के मध्य आधारभूत संरचना विकसित करने पर भी सहमति हुई।
- साथ ही दोनों पक्षों ने पर्यटन केन्द्रों को विकसित करने और इस दिशा में आपसी सम्पर्क बढ़ाने की घोषणा की।

भारत के परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो 16वां आसियान भारत शिखर सम्मेलन व 13वां पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन 2018 महत्वपूर्ण है। क्योंकि इन शिखर सम्मेलनों में भारत का प्रतिनिधित्व प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने किया। भारतीय प्रधानमंत्री पांचवी बार इन सम्मेलनों में शामिल हुए। विशेष बात यह है कि जहाँ 10 देशों के राष्ट्राध्यक्षों के साथ भारत की शिखर बैठक होती है, वहीं पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन में आसियान के 10 देशों के साथ 8 अन्य देश भी शामिल होते है।

- 16वें शिखर सम्मेलन में भारत के साथ दक्षिणी पूर्वी एशियाई राष्ट्रों ईडोनेशिया, मलेशिया, फिलीपींस, सिंगापुर, ब्रूनेई, कंबोडिया, लाओस, म्यांमार, वियतनाम तथा थाईलैण्ड के राष्ट्राध्यक्षों ने भाग लिया।
- दक्षिणी पूर्वी एशियाई राष्ट्रों के शिखर सम्मेलन के तत्पश्चात् ही 13वां पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन सिंगापुर में सम्पन्न हुआ। इसमें आसियान देशों के सभी देशों के अतिरिक्त आस्ट्रेलिया, चीन, भारत, जापान, न्यूजीलैण्ड, रूस, दक्षिण कोरिया व अमेरिका इस वार्षिक सम्मेलन में शामिल हुए।
- सामरिक रूप से महत्वपूर्ण हिन्द प्रशांत क्षेत्र की समृद्धि के लिए समुद्री सहयोग और व्यापार के केन्द्रीकरण की आवश्यकता पर बल देते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इस शिखर सम्मेलन को सम्बोधित किया।
- भारतीय प्रधानमंत्री ने विश्व के सबसे बड़े बैंकिग सॉल्यूशन में से एक एपिक्स को सिंगापुर के तीसरे फाइनेंस टेक्नोलॉजी उत्सव में लॉच किया। यह सॉल्यूशन भारत सहित विश्व के उन 23 देशों के दो अरब लोगों को जोड़ेगा जिनके पास बैंक खाते नहीं है।
- सिंगापुर के नान्यांग टेक्नोलॉजिकल यूनिवर्सिटी और अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद द्वारा भारत–सिंगापुर हैकाथन का आयोजन किया गया। जिसमें भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भारत–सिंगापुर हैकाथन के विजेताओं को सम्मानित किया। इन सबसे इतर अमेरिका के

उपराष्ट्रपति माइकलपेंस सहित सिंगापुर, ऑस्ट्रेलिया और थाईलैण्ड के प्रधानमंत्री से व्यापार, रक्षा और सुरक्षा सम्बन्धी विषयों पर गम्भीर चर्चा भी हुई।

आसियान–भारत सम्बन्ध

आसियान को दक्षिण पूर्व एशिया में सबसे प्रभावशाली समूहों में से एक माना जाता है। भारत और अमेरिका, चीन, जापान व आस्ट्रेलिया सहित कई अन्य देश इसके संवाद भागीदार है। आसियान भारत संवाद सम्बन्ध 1992 में एक क्षेत्रीय साझेदारी की स्थापना के साथ शुरू हुए।

यह दिसम्बर में पूर्ण संवाद साझेदारी और 2002 में शिखर स्तरीय साझेदारी की ओर अग्रसर हुआ। परम्परागत रूप से भारत–आशियान संबंधों का आधार साझा ऐतिहासिक और सांस्कृतिक मूल्यों के चलते व्यापार एवं लोगों के बीच संबंध रहा है। भारत और आसियाना दोनों का लक्ष्य चीन की आक्रामक नीतियों से बचाना एवं शान्तिपूर्ण विकास के लिए एक नियम आधारित सुरक्षा ढॉचा स्थापित करना।

सहयोग के क्षेत्र–आसियान भारत सम्बन्ध के परिप्रेक्ष्य में

आर्थिक सहयोग–आसियान भारत का चौथा सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार है–

- वस्तुक्षेत्र में मुक्त व्यापार समझौता वर्ष 2009 और वर्ष 2014 में सेवाओं व निवेश में मुक्त व्यापार समझौते पर भारत ने आसियान के साथ हस्ताक्षर किये।
- FTA के लागू होने के बाद से इनके बीच व्यापार लगभग दोगुना होकर वर्ष 2019–20 में 87 बिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक हो गया और फिर वर्ष 2020–21 में महामारी से प्रेरित मंदी के कारण घटकर 79 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया। भारत का आसियान क्षेत्र के कई देशों के साथ एक व्यापक आर्थिक सहयोग समझौता है, जिसके परिणामस्वरूप रियायती व्यापार और निवेश में भी वृद्धि हुई।
- अप्रैल 2021 से फरवरी 2022 की अवधि में भारत और आसियान क्षेत्र के बीच वस्तु व्यापार 98.39 विलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुॅच गया। भारत के मुख्य व्यापारिक सम्बन्ध इंडोनेशिया, सिंगापुर, मलेशिया, वियतनाम और थाईलैण्ड के साथ भी है।

राजनीतिक सहयोग

आसियान भारत केन्द्र (AIC) की स्थापना भारत और आसियान के बीच संगठनों एवं थिंक–टैंक के साथ नीति अनुसंधान तथा नैटवर्किंग गतिविधियों को करने के लिए की गई थी।

वित्तीय सहायता

आसियान भारत सहयोग कोश, आसियान–भारत विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विकास कोश और आसियान भारत ग्रीन फंड जैसे विभिन्न तंत्रों के माध्यम से आसियान देशों को भारत वित्तीय सहायता करता है।

कनेक्टिविटी–भारत, भारत–म्यॉमार–थाईलैण्ड त्रिपक्षीय (IMT) राजमार्ग और कलादान मल्टीमॉडल परियोजना जैसी कई कनेक्टिविटी परियोजनाओं पर काम कर रहा है।

सामाजिक–सांस्कृतिक सहयोग–लोगों से लोगों के सम्पर्क को बढ़ावा देने के लिए आसियान द्वारा कई कार्यक्रम आयोजित किये जाते है। जैसे कि आसियान देश के छात्रों को भारत में आमंत्रित करना, आसियान राजनायिकों के लिए विशेष प्रशिक्षण, पाठ्यक्रम, सांसदों का आदान–प्रदान आदि।

रक्षा सहयोग– संयुक्त नौसेना और सैन्य अभ्यास भारत और अधिकांश आसियान देशों के बीच आयोजित किये जाते है। वाटरशैड ''सैन्य अभ्यास वर्ष 2016 में आयोजित किया गया। पहला आसियान–भारत समुद्री अभ्यास वर्ष 2023 में आयोजित किया जाएगा। वियतनाम रक्षा मुददों पर घनिश्ठ मित्र रहा है, सिंगापुर भी इतना ही महत्वपूर्ण भागीदार है।

पूर्व की ओर देखों नीति के परिप्रेक्ष्य में भारत–आसियान सम्बन्धों की शुरूआत एक आर्थिक नीति के रूप में हुई थी जो कि अब सिर्फ एक आर्थिक नीति ही नहीं रह गई है बल्कि लगातार बदलते वैश्विक माहौल में एक मजबूत कूटनीतिक तथा सामरिक नीति बनकर उभरी है।

आसियान का महत्व भारत की दृष्टि में

आर्थिक और सुरक्षा कारण से भारत को आसियान देशों के साथ घनिष्ठ राजनयिक सम्बन्ध स्थापित करने की जरूरत है। आसियान देशों के साथ कनेक्टिविटी भारत को इस क्षेत्र में उपस्थित मजबूत करने में मदद कर सकती है। ये कनेक्टिविटी परियोजनाएं पूर्वोत्तर भारत को केन्द्र में रखती है, जिससे पूर्वोत्तर राज्यों का आर्थिक विकास सुनिश्चित होता है।

आसियान देशों के साथ बेहतर व्यापार सम्बन्ध का अर्थ इस क्षेत्र में चीन की उपस्थिति का मुकाबला करने के साथ–साथ भारत की आर्थिक वृद्धि और विकास है। चूॅकि भारत का अधिकांश व्यापार समुद्री सुरक्षा पर निर्भर है, आसियान भारत–नियम–आधारित प्रशांत की सुरक्षा ढॉचे में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। भारत की आर्थिक नीति की खोज के फलस्वरूप हमारी 'लुक–ईस्ट' नीति अस्तित्व में आई। एशिया–प्रशान्त क्षेत्र में आसियान का आर्थिक, राजनीतिक और सामरिक महत्व तथा व्यापार और निवेश में भारत की एक प्रमुख भागीदार बनने की क्षमता, हमारी नीति का एक महत्वपूर्ण कारक है।

पूर्वोत्तर में उग्रवाद का सामना करने, आतंकवाद का मुकाबला करने, कर चोरी आदि जैसे मामलों के लिए आसियान देशों के साथ सहयोग आवश्यक है। आसियान का म्यांमार को शामिल करते हुए पश्चिम की ओर लगातार विस्तारित होना, यह अब एशिया–प्रशांत आर्थिक धारा से भारत को जोड़ने के लिए एक सेतु प्रदान करता है। जो कि भूमण्डलीकरण के युग में 21वीं सदी के बाजारवाद की ओर उन्मुख होगा।

पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन के समक्ष चुनौतियाँ

- ई.ए.एस. के समक्ष एक बडी चुनौती के रूप में उभर रहा है चीन और जापान के बीच मतभेद। जिस कारण से चीन और भारत के बीच भी सम्भावित प्रतिद्वन्दिता उत्पन्न हो रही है।
- संस्थागतकरण और संस्था निर्माण के प्रश्न ने भी ई.ए.एस. पर नकारात्मक प्रभाव डाला।
- किसी भी संगठन का सक्रिय होना उसके एजेण्डे पर निर्भर करता है और इसी एजेण्डे को सुव्यवस्थित न कर पाना ई.ए.एस. के लिए तनाव का कारण बना हुआ है क्योंकि इनका एजेण्डा बहुत ही व्यापक है जिसे क्रियान्वित करने में कई कठिनाइयाँ सामने आ रही है।
- आर्थिक एजेण्डे के अन्तर्गत भी सम्पूर्ण एशिया में मुक्त व्यापार क्षेत्र के निर्माण की दिशा में व्यापार से सम्बन्धित मुद्दों को प्राथमिकता पर रखा जाए।
- इस क्षेत्र में कार्यरत अन्य क्षेत्रीय संगठनों जैसे ASEAN, APEC आदि उपक्षेत्रीय समूहों के साथ ई.ए.एस. का सम्बन्ध भ्रमित करने वाला है।

ई.ए.एस. के प्रमुख कार्यक्षेत्रों की सक्रियता

- पर्यावरण और ऊर्जा
- शिक्षा
- वित्त
- वैश्विक स्वास्थ्य सम्बन्धी मुददें और महामारी

- प्राकृतिक आपदा प्रबन्धन
- आसियान देशों के मध्य संपर्क/आपसी संबन्ध
- आर्थिक व्यापार और सहयोग
- खाद्य सुरक्षा
- स्मुद्री सहयोग।

आगे की राह

भारत और आसियान के अपने सुरक्षा परिदृश्य में समानता है। हिन्द महासागर की सुरक्षा से इस क्षेत्र में शान्ति स्थापित करने तथा कच्चे माल तथा ऊर्जा आपूर्ति के बिना रोक–टोक आवागमन में ही हमारा हित निहित है। सजीवता एवं निरंतरता बनाए रखने के लिए इन मैंकाग भारत और 5 एशियाई देशों कम्बोडिया, लाओस, म्यांमार, थाईलैण्ड और वियतनाम एक साथ अग्रसर होते है। लुक ईस्ट नीति का महत्वपूर्ण आधार स्तम्भ बिम्सटेक है, यह नेपाल, भूटान, बंग्लादेश, श्रीलंका म्यांमार और थाईलैण्ड को भारत के साथ लाता है।

'लुक ईस्ट नीति हमारी आर्थिक उत्थान की खोज के पश्चात् ही अस्तित्व में आई। आसियान भारत के लिए इसिलए महत्वपूर्ण है, क्योंकि वह हमारी एक्ट ईस्ट पॉलिसी के जरिये भारत पूरे एशिया पैसिफिक क्षेत्र में अपने सम्बन्धों को बेहतर करना चाहता है। भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने म्यांमार में आयोजित आसियान भारत शिखर सम्मेलन में एक्ट ईस्ट नीति की घोषणा की।'

आसियान और भारत को व्यापार तथा निवेश सम्बन्धों को सुदृढ़ करना चाहिये। आसियान के साथ भारत का व्यापार विश्व के साथ भारत के व्यापार की तुलना में तेजी से बढ़ा है। भारत, आसियान में महत्वपूर्ण गैर–टैरिफ बाधाओं का सामना कर रहा है जो आसियान के साथ इसके निर्यात को भी सीमित करता है। आसियान और भारत के बीच श्रृंखलाओं में वर्तमान जुड़ाव पर्याप्त नहीं है। आसियान और भारत उभरते परिदृश्य का लाभ उठा सकते हैं तथा नई एवं लचीली आपूर्ति श्रृंखलाओं के निर्माण के लिए एक–दूसरे का समर्थन कर सकते है। हालॉकि इस अवसर का पता लगाने के लिए आसियान व भारत को अपने कौशल को उन्नत करना होगा रसद सेवाओं में सुधार करना होगा और परिवहन बुनियादी ढॉचे को मजबूत करना होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अंग सलिगंग बातस एन जी आसियान (आसियान चार्टर), दक्षिण–पूर्वी एशियाई राष्ट्र संघ, 10 जनवरी 2018।
2. अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, भारत की पूर्व की ओर देखो नीति, डॉ.बी.एल. फड़िया साहित्य भवन पब्लिकेशन, सिकन्दरा (आगरा)
3. मुहम्मद इस्माइल मार्सिकोवस्की : एतिहासिक परिप्रेक्ष्य में स्याम/थाइलैण्ड और समुद्री दक्षिण पूर्व एशिया में फारसी धार्मिक और सांस्कृतिक प्रभाव एक सम्मिलित अंतः विषय दृष्टिकोण के लिए एक याचिका, 18 जुलाई 2020 को मूल से संग्रहीत।
4. फदेली मुहम्मद अल–अमीन मोहम्मद और अन्य (2019) मलय इतिहास और संस्कृति, शिक्षा के माध्यम से।
5. टार्लिंग, निकोलस (1999) दक्षिण पूर्व एशिया का कैम्ब्रिज इतिहासः खण्ड–2, भाग–2 द्वितीय विश्वयुद्ध से वर्तमान तक/कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस पी 287, आई.एस.बी.एन., 978–0521–66372–4
6. आसियानः एक अप्रत्याशित सफलता की कहानी, 16 मई 2018
7. ए.वी. कैरोलिन एल गेट्सः मैया थान (2001), आसियान इजाफा प्रभाव और प्रभाव दक्षिण पूर्व एशियाई अध्ययन संस्थान।
8. आसियान के दसवें सदस्य राज्य के रूप में कंबोडिया साम्राज्य का स्वागत करते हुए आसियान के महासचिव द्वारा बयान, 30 अप्रैल 1999, आसियान सचिवालय।
9. आसियान को रोंहिग्या मुददे पर म्यांमार ओर सू की पर दबाव बनाना चाहिए, डॉ. एम. कहत (17 दिसम्बर 2018)
10. The Globalization of world politics an intropduction to internation edition John Baytis, steve smith and Patricia owerns